

DPN 5937

Title : गृहस्थ पूजाविधि { घृतमधु प्रासन
अन्न प्रासन
बाधा व्यनके } GRHASTHA PŪJĀ VIDHI

Run. No. 6628

Cat. No.

Micro. No.

Subject सत्त्व किं रिचुल

Religion : Hindu / Ba^uddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 19.3 x 8.8

Folios 37

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / don^or

फणिन्द्ररत्नवज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phanindra Ratnavajracarya

Script : New. / Dev. / Bhu^j. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thya^ssaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमो वज्र सत्त्वाम : । घृत मधु प्रासन कर्म ॥ मि दुय विधीमाह ५

0 cms.

5

10

15

20

समाप्ति वाक्य / Colophon

इती धृत प्राश्ना मवा सु वेन¹ समाप्तः ॥

आदि वाक्य / Beginning

अनके माये ॥

समाप्ति वाक्य / Colophon

इती धृत प्राश्ना अन प्राश्ना अनके विधि समाप्तः ॥

आदि वाक्य / Beginning

अं नम शिवाय सूर्याय स्वाहा ॥ अथ गण धातु विधिः ॥

बाधा तये खुनु मचाया सतवाल वियेके । सूर्य रवे म्द वासु तये पेनु खुनु
चीकं सायेके ॥ खुनु खुनु सज्जन चीकवे . . .

गृहस्थ पूजाविधि

{ चृतमध्यु प्रासन
अन्तप्रासन
बाधा व्यतरे

फरणीन्दुरत्न वज्राचार्य

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20



धृतमधुप्राप्त

ॐ नमो ब्रह्मसत्ताय ॥ धृत मधु प्राप्त
नक्तर्मे ॥ मधुप विधि साह ॥ दार्प
कलासः सद्यं सत दिदि वतु दिगुं डा
मय थापीः रवाज देव थापू ना
याये ॥ धनं हि अमृचापः आसुर्याद्य
॥ धनं पञ्चाभः सवत्स याये गुरु
संडल दने पंचगव्यं दायि लिङ्ग

दिवा १३

तेषु मयत्त धिये स्नान बोधे किञ्चन र
हने इनाय पजा दोय मइनी कये
समाधे वरुवैये ॥ धर्मा सिद्धि श.
सर्प मत्त देग समय थापि पूजाया
ये विधीये पूजा धुन काव देव
पुजा धुनीराजत विधीये पूजा
धुनकाव दिदि वरु कुहोस चोवि

स्नानि शोभा १२ मुनि चिन्द तये व
दिदि वरु विधे पुजा याचने ॥
धनं हि मचा हास्मसे इधे स्नानि
स्नाने गुरु मंदरा दनेने मचा या
न होहा गणा रक्षा स्नान छकोत
नामने वावे ॐ नमः शिवाय मातृ
ना भाव मेत् ॥ धृत प्रा सनार्थ

नामो नमो गिरिमित्यार्थ ॥ स्वभावशु
द्धा सर्व धर्मा नांः त्यादि ॥ चर्न पेचग
व्य विषे निराजन होइ गी नजाना
ना मतपद तोये ॥ यिचा न्दापतीदेग
तोस्य विषे स्वीस्तो नाने यदुरयोविष
॥ ॐ नज नोदयग धृजान नजाना
स स्य स्वा हा ॥ चर्न नगतीस द्वा

स घेहा न्दाहा सारव नोत स्य
हापा नन्द सूर्य इष्ट देवता प्राते
मा देवता दिदि वउ नयानि मृ पू
जा पाना वदाये ॥ चर्न मोचा पात
नने ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा नोचायेने ॥
ॐ धृत मधु प्राप्तने स्वाहा ॥ घेहा
कासि सारव नस्य नने पातइ

साधुः शोचन्ते सर्वदेवता निन्ता
मृत धारय स्वाहा ॥ शोचन्ते ॥
मृत शोचन्ते मृत दोगे ॥ अग
मदायः उगुचाये मे ॥ ॐ अग
हा मृत सर्व शरीर मृत मृत
स्वाहा ॥ गोहो ननं निन्ते नाम
मृगी मृये नक्षत्रातितां असुवना

म मृवे स्वीसदं दुमे मृय मृपा
नू गता ॥ मृयानां नं सं ददा थीवे
॥ मृगी गो गोनेवे आसिर्वा द वीये
सध नानये मिपुतान वीये ॥ अन
नन्दिनं सध दोगे ॥ नैरा पूडा दक्ष
ना अनैरिगु समवे दामे दिदि नीति
दोगे सिन्धू मासू नीये ॥ दिगु सम

न्याय चाना सुदये ॥ दोहा न
जि माहा इसी पुगी नाल्ये मोहन
अने सुखसिधी दानगाथा खान
नो न्याये ॥ इसी पुन प्राहाव
सचा नु नेन न स माप ५०

जानको यापे म ऊं नमो जिव ज्ञान त्याग
 ॥ अथ याज्ञान विधि साद ॥ नवो
 ध्यानां स्पं स्थापना यापे ॥ संगोत
 केत मत् नीसा देसात् वाक्य १
 मालको तस्व दिदि नली रिद्धि कोमा
 री मुजा गोलाको नव मुजा दिग्
 सम ये आदि धार्मी नीगता पञ्चाग

य धोने आपहोपे रिन्नाये गरु म
 इहा मञ्ज व्य रिद्धत य मत्ता तथो
 जो स्वात बोये वाववली इनाये पु
 जा न्हेये ॥ रिन्नायाये मद्गीप्ये
 समाधी नाउवीये केस पुजा धार्मी
 विधि ये पुजा ॥ देव पुजा पुनक
 न ॥ दिदि पुन वली पुजा ॥ ॥

॥ सूर्याय देवाय नागसंन्दासं पद्म
रागसंनिप्रभं सप्तासोर्थं महातैद्य
ओवज्जसूर्यनमो मे हं ॥ चंद्रसाय
देवाय नाम स्तोत्रे तु हिमासाय नमो
स्तोत्रे हिमाकां नमो स्तोत्रे करारं
वर्णा चंद्रनमो स्तोत्रे ॥ निता रंभति
राब्दा निर्वोक्तं त्वहं वीनी ॥

मोनी रूपमहा नोत्र इत्ता देवयनमे
स्तुते ॥ जलनी सर्व बुद्धाना सर्व सत्व
प्रदातं सर्व दुष्ट इत्ता देवी सतांता
या य मोचनी ॥ थोने धुन कान नोद्धा
ये के दोये ॥ भन वतात नुचा यवे
हं ही आच मन प्रतीतस्वा हं ॥ रुम
सी आगे न के मुहारीद पदो स्वाहं

मुहूर्त दे दफोन के नोनाये के धुन काव मास
यात सिपी हावो होये चोपे वो तस्य कहदिम
पञ्चापहार पुजा यात कहारब होये ॥ थनं जान
को हत नुपूरी निता देसा दिगजोस्य
संख हाव हायाले स्वाति वाके मदहाय नि
सावदाये के देसा मास यात हाव होये थनं
तीराने तिये के ॥ मन्त्र ॥ ॐ सर्वा मुसने

ज्वाहा ॥ थन धात सतन कीये धुन का
व न न न पुजा याये गोश धीन न न न
धुन काव कोसाणि पुजा धुन काव
चाक पुजा याये मरात न थिने स्वात
वाये की न न निने उगादि की उ धुन का
व राजा दात मरात न विस जान याये
रथ न दये वात पुजा दक्षता उ गाते

नदि विधे मताक्षर वदनाय नौ मारि पुजा
दोये ॥ धन नने मुजा दोगा तोय
इ गायने सार्व लोच हायास्व मुजा मो
धन याये अंगु मीत नं थीये ॥ मंत्र ॥
ॐ लोमगवते सर्व बुद्ध बोधि जत्वा
जोद इहो स्वाहा ॥ ॐ आह ॥ धार नाना
व आधि ध्यान याये ॐ हि स्वाहा ॥ धन

आगम दोये फल प्राप्त न याथे वो
व धाव पुजा याना दोये फल दोये ॥
गद्ग सुख्य इष्ट देवता दिदि वलि प्रति
मोदेवता श्वते दोये धवता दको हयो
व मचाया ल ज्ञान के ॥ धेन सार्व
वाग्ग उगादेन सवता कया व निप
थोये के ॥ मंत्र ॥ उपानाये स्वाहा

अगुहा ॥ ॐ आनंजं मृते ह ॥ थोतो
जे ॥ ॐ उग्रा नाथे स्वाहा ॥ दधुहा
॥ थुग वदं न्याव तीनं नन्वे ॥ ॐ समा
नाथे स्वाहा ॥ चरा ॐ उग्रा नाथे स्वा
हा ॥ सना ॥ समाधि ध्यानी धिंदने
स्वाहा ॥ नृमीयेवे ॥ ॐ हि आन मन
प्रती न स्वाहा ॥ शुद्धी धुत वदाव

आना मुद रे नियेवे ॥ दायेवो
नाया कदा दोये ॥ वपुयेवे ॥ नाम
लातये ॥ स्वाना साहात वदेरवा
येवे ॥ अनिबो वदेरवानं वदेरवा
येवे ॥ संडा ॥ ॐ सर्व साहा मु
षने स्वाहा रिफ नं लुये पचं ग
न्धा ती येवे ॥ वदहा सा साहेन

वीये ॥ चतुस्रोहाराधयेदे ॥ ॐ ह्रु
प्रति वृत्तार्जे स्वाहाः धनं देन जापये
हिन्दुही तिये गुरु यात दक्षाना विये ॥
दे गुरुम ये रमाजहदिये सिधो विये
सम या चन्द्र विराजुन आये ॥

॥ धन ही धरुन ही ज्वरा ज्वरा
कये दे रम ज्वना व स्वक लू

ये जरुन आदौ कल्यान जोने ॥
धुनं मि मौनये नृत्तो ये वे धुव
ही कल्या हो ये नमिता काये
स्वान-दो-दा ये मुख मोदी
दानगाथा ॥ ४ ॥ इती प्रह पा
सत उपश प्राप्त जान को विधि
समा धै

(वाद्यवेनके)

ॐ नमः शिवाय सुधीये स्वाहा ॥ अथ गम
ध्यात विधि वाधा तये स्वन सचाय
त सतत वा विद्ये के सुधर्मे स्वनोम
दु ध्यात तये वेत्त स्वनः श्रीर्दे साधि
के ॥ स्वन स्वरु स्वन नवी येन
न्याह शिपूना नवीये वत के स्वन
हारी येन के तीर्थ पुजा नदये

ॐ सुख्यं योना दिग्वा नन्दे वास १२
न स स्वर यायेन्दे धुत काव पि
स्नात्वा नुरा सादु दुहा ये न्देहा न्देये
॥ ॥ ॐ सुयो र्ध याये थन ही धुस
नगं सत देगु समये नाही स्ना ज्ञा ज्ञा
नाम पुजा था न्द हा मे पुजा भ संध
ह्य याये रज स्वहा गनी धारन प्राय

मीन मो न नार्थ इदं पुष्य साज सव
ह्य यात्मे हुं ॥ ॥ गुरु सारुहा धुत काव
प न गव्य विधे सत सिद्ध ह स्ने पु
जा याये थन ही थात मुस रन ह च
न्दन सिद्ध हा न्द सा नो या स्ना ३ गु
द र्हा नी र स्ना ३ अ नो दा पो स्ना
न २१ पो हा नो ये ॥ ॥ ॐ ॐ न ज्ञा

दिवाक नडा पुष्पं स्वाहा ॥ ५॥ ॐ
आदि स्वाहा नडा पुष्पं प्रीतिद स्वाहा ॥
इवने ॥ ॐ नमो सूर्याय नडा पुष्पं प्रति
द स्वाहा ॥ ६॥ ॐ आसंदाय नडा
पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥ ७॥ ॐ
आनं राय नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा
॥ ८॥ ॐ आस साहा

य नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥ ९॥ ॐ आ
रोहीत य नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥ १०॥ ॐ
ॐ आरोहीत य नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥
॥ ११॥ ॐ आवाचाय य नडा पुष्पं
प्रीतिद स्वाहा ॥ १२॥ ॐ आवाचाय
य नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥ १३॥ ॐ
आमनाय य नडा पुष्पं प्रतिद स्वाहा ॥

॥ इमान् ॥ ८ ॥ चतुर्हो अष्टाष्टौ ये ते तद्वत्तो
य दिग्ग मद्भुतपार ॥ ॐ ह्रीर्नि वाय
स्वाहा ॥ रोहनी स्वाहा ॥ ॐ मृगशिराया स्वाहा
॥ ॐ अश्लेषाया स्वाहा ॥ ॐ पुनर्वसुय वसुय स्वाहा ॥
ॐ पुष्यय स्वाहा ॥ ॐ उत्तराशाया स्वाहा ॥ मघा
या स्वाहा ॥ मृगशिराया स्वाहा ॥ ॐ उत्तरा
फाल्गुनी स्वाहा ॥ ॐ इसाया स्वाहा ॥ ॐ

चिन्ताया स्वाहा ॥ ॐ स्वातीया स्वाहा ॥ ॐ नि
शाचिकाया स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ अनुराधा
या स्वाहा ॥ ॐ ज्येष्ठाया स्वाहा ॥ ॐ मूलाया स्वाहा
॥ ॐ पूर्वाषाढाया स्वाहा ॥ ॐ उत्तराशा
या स्वाहा ॥ ॐ अर्वाक्षीया स्वाहा ॥ ॐ
पूर्वर्वा स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ अर्वाक्षीया
स्वाहा ॥ ॐ ज्येष्ठाया स्वाहा ॥ ॐ

15
ॐ वेमदाय स्वाहा ॥ ॐ उडा मदाय स्वाहा ॥

ॐ रेवतीय स्वाहा ॥ ॐ अमनेय स्वाहा ॥

उत्तर ॥ ॐ धनदादमरासी नोये ॥ ॐ मरु

गामीय स्वाहा ॥ वृषारामाय स्वाहा ॥ दक्षिण

मिथुनरामाय स्वाहा ॥ दक्षिण ॥ ॐ

मरासीय स्वाहा ॥ उत्तर ॥ सिंहरामाय

स्वाहा ॥ अगनीत्य ॥ ॐ न्यारामाय स्वाहा ॥

मेरीत्य ॥ महरामाय स्वाहा ॥ नायुव्य ॥

नोव्य रामाय स्वाहा ॥ इत्तान ॥ धनुरा

सीय स्वाहा ॥ पुन ॥ ॐ रामाय स्वाहा ॥

॥ दक्षिण ॥ ॐ मरामाय स्वाहा ॥

वक्षिण ॥ मीन रामाय स्वाहा ॥

उत्तर ॥ धनुरा इन्दुदि दक्षिण ॥ स्वान

लोय ॥ इद्राय स्वाहा ॥ उर्वे ॥ यमाय
स्वाहा ॥ इक्ष्वायु ॥ नरुणाय स्वाहा ॥
यक्ष्मिणाय स्वाहा ॥ इतर ॥ अ
ग्नेय स्वाहा ॥ अग्नेत्य ॥ तेरीत्य स्वाहा
॥ तेरीत्य ॥ वायुय स्वाहा ॥ वायुय

इसा नाय स्वाहा ॥ इमान् ॥ उर्ध्वमने
स्वाहा ॥ धनने ॥ अंश धनीय स्वाहा ॥
धनेने ॥ १० धन स्वाम देवा स्पमाव
ना ॥ इति सुय्य देवता मन्त्रा व्दाय
उत्ति दीने रज स्वाहा प्रायचित्त

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो

ॐ नमो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

10

5

0 cms.

5

10

15

20

ॐ नमो भगवते ॥ सभावा सुधा
त्पादो निधीये पुजायाये ॥ धन धातु
म स्वान बोधो गुणीत अर्घ्य दानावे
त्पाने अर्घ्ये दाने स्वाहा ॥ नमो
दक्षे ना ६ तस्य अर्घ्य दाने वाग्दे
॥ ३८ नमो भगवते य न्नामं वज्रोना
य अर्घ्य दाने गन्तुं मुताय न

शिगदे धर्म वाय अमुत्प वरुण
सिद्धताय नन्दित नाये पद्म राग
व रश्मि रश्मि मस्त नाय रक्त गन्ध स
वज्र ज्ञेय प्रीति त प्रीयाये ॥ गन्ध
नमो रुधाय देवता नाव नुम्मा
द विमरीत्य सिद्धताय आवका

२ भागवान् मनुस्मान्नादि ताथाम्
ईदं गृह मन्दल उदये उग्न पुन्यस
इदं अक्षतं गद्य पुन्य पुन्य दिप
पदार् मलिपुता नता नमोस्ते तेज
सु वंते नस्मापरी करो मव मा
नागी पुली नु र क्षाती यऽग्नने

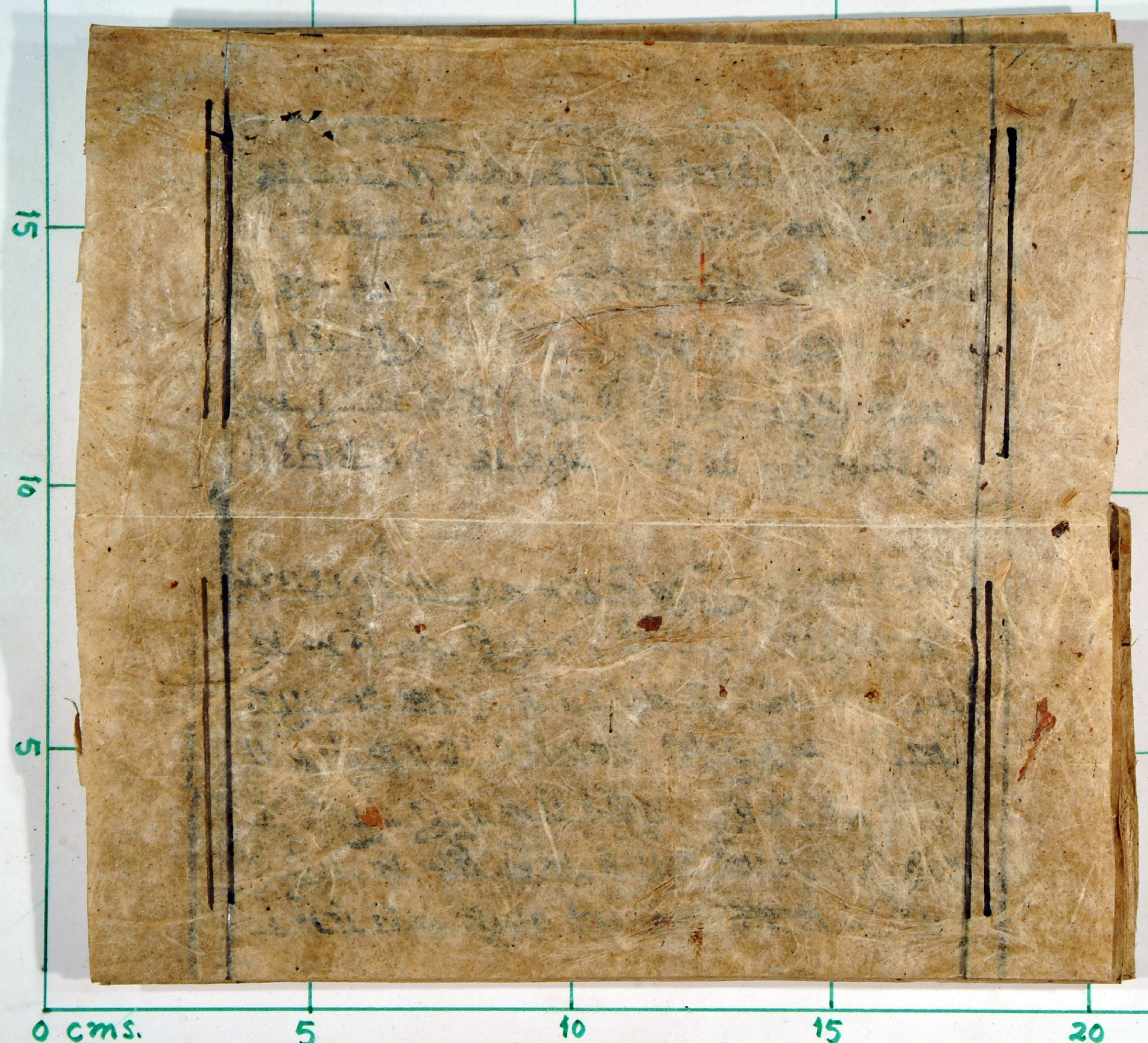
नस्मै उ. दिवाप्ता ह्यो न नाथ
उसदा त्याय अघं पुति य स्वादा
अनमो न्युपसे सारव पुजा याये
ने स्तोत्र दधीस्व तुरवाराम
द्विषायाग नमः भवं नामासी नमः

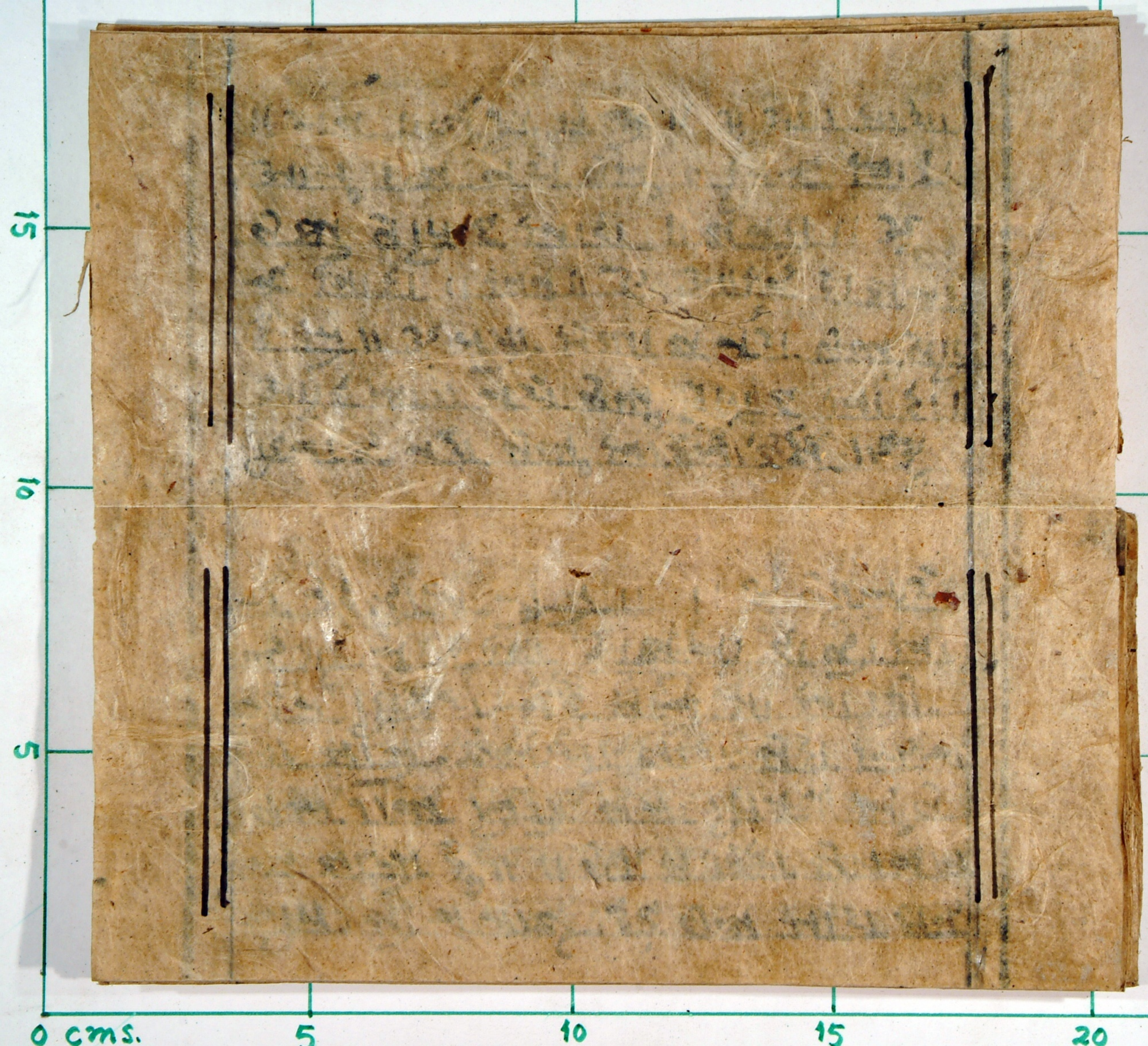
जनने देहा मनुज मूषन ॥ १॥

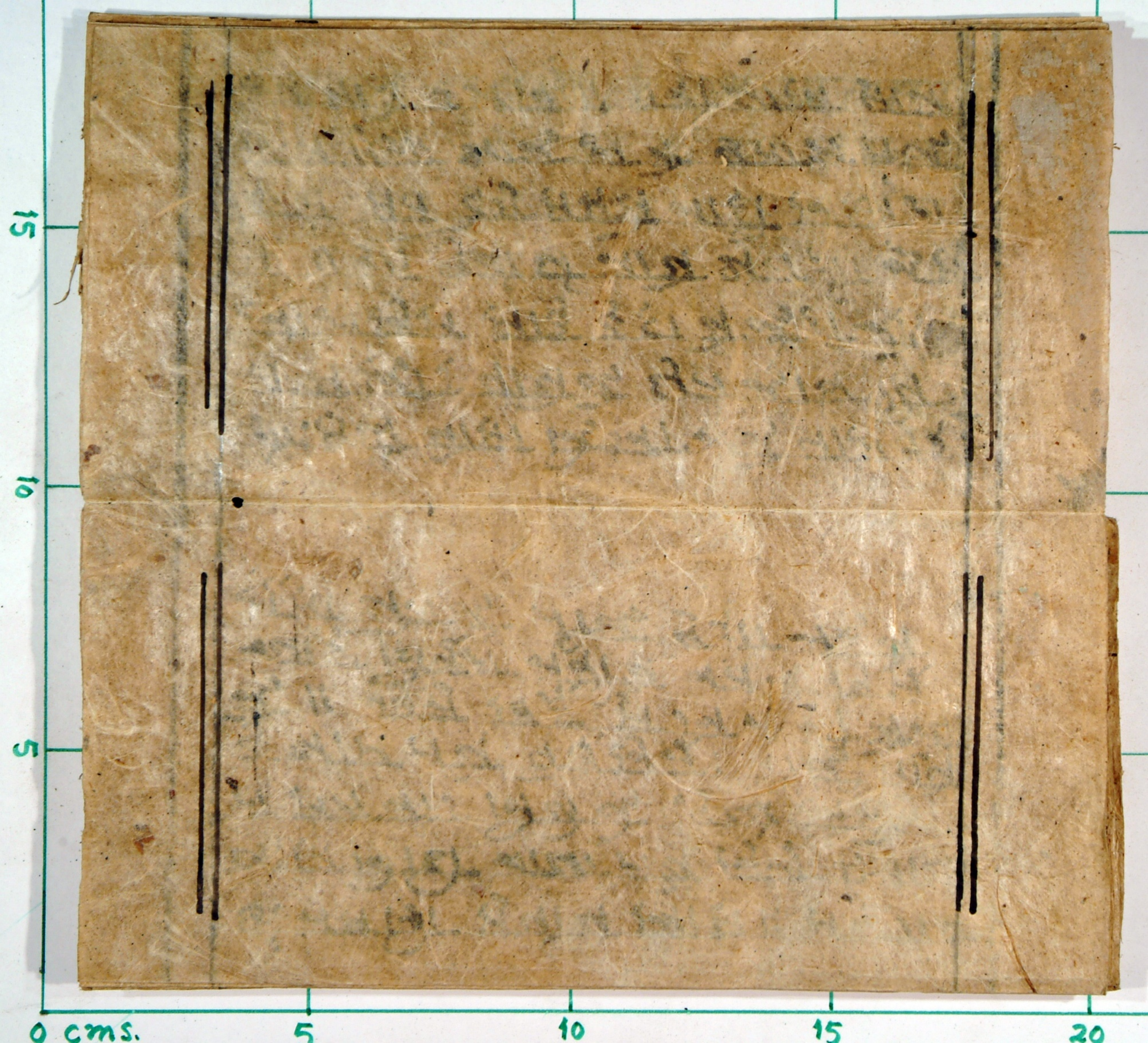
पुनः मरुतस्य धीहो विज्वलीने ॥

जवाकुस संकासं काश्यपं महासुतिं जामासिहं

~~सर्वे~~ सर्व प्रापुच प्रणामाणि दिवाकर







15

10

5

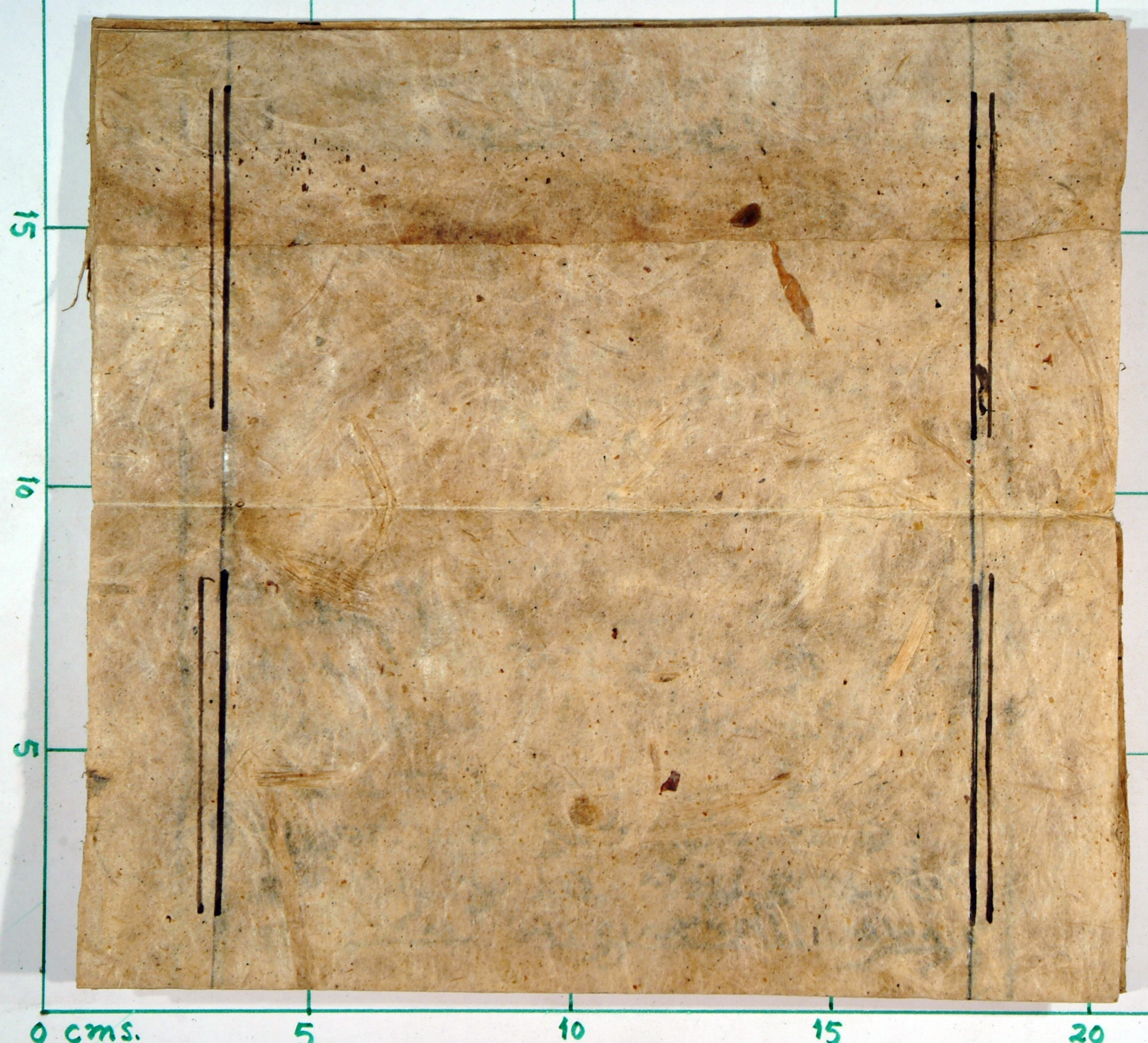
0 cms.

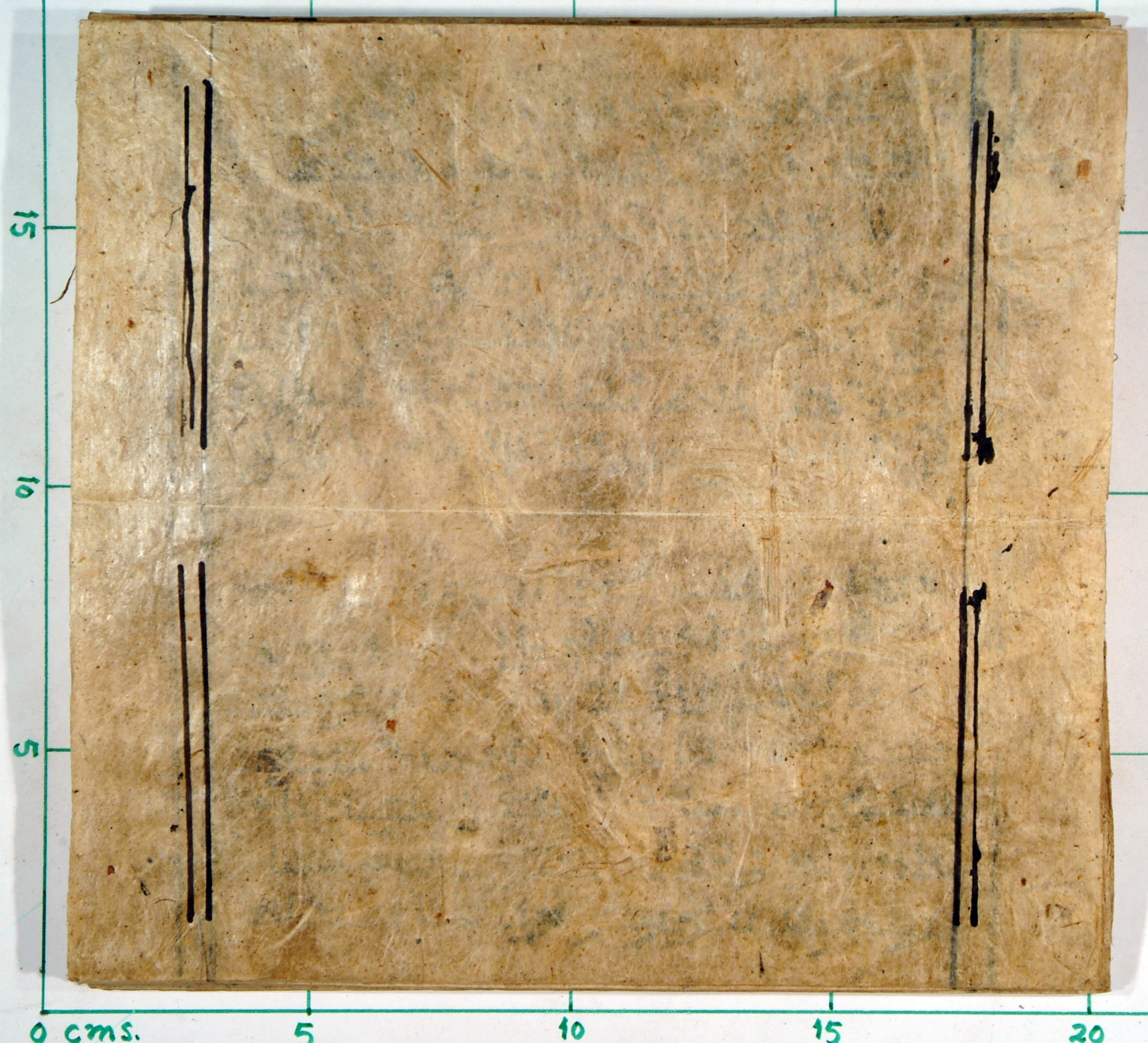
5

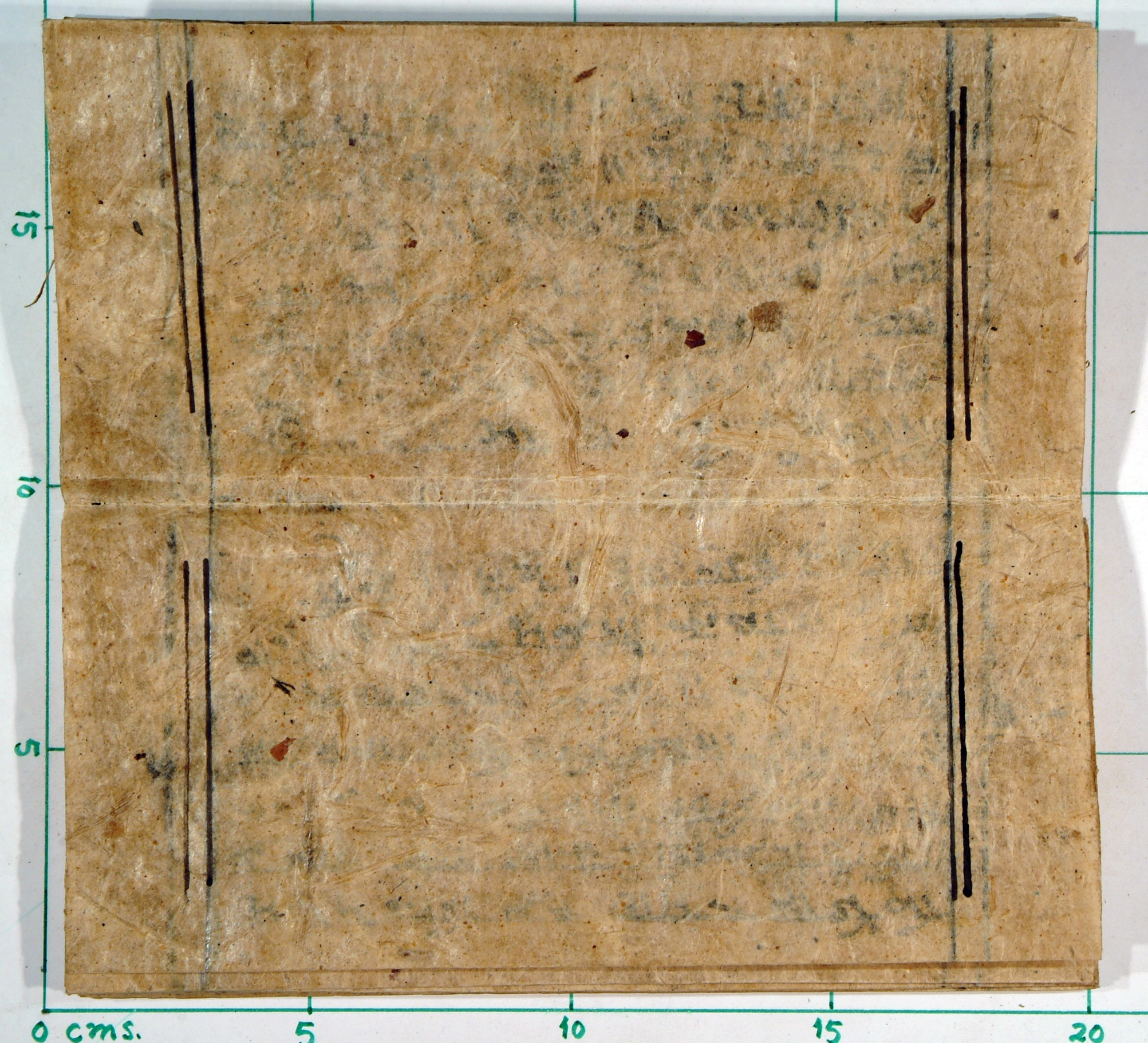
10

15

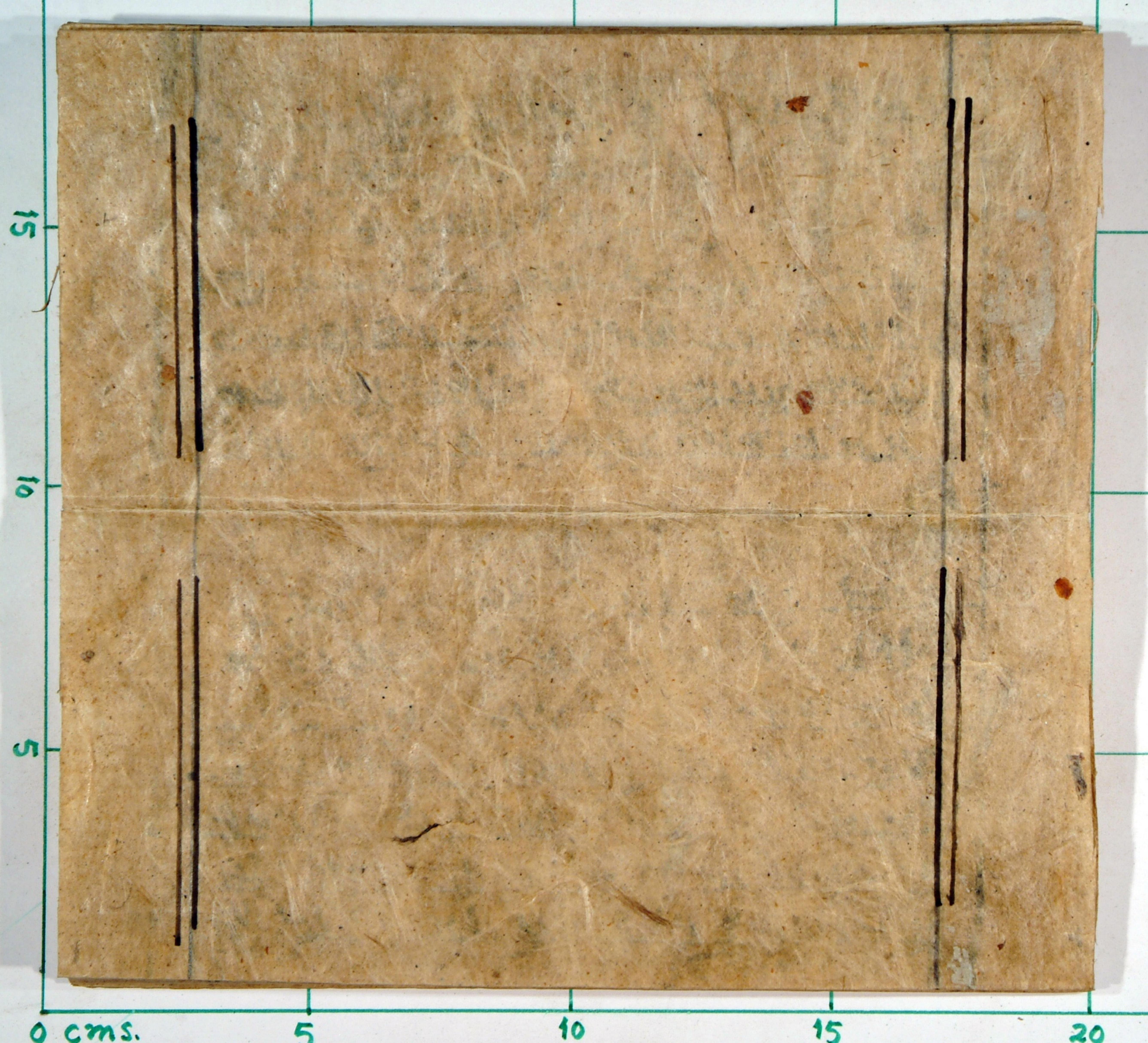
20











15

10

5

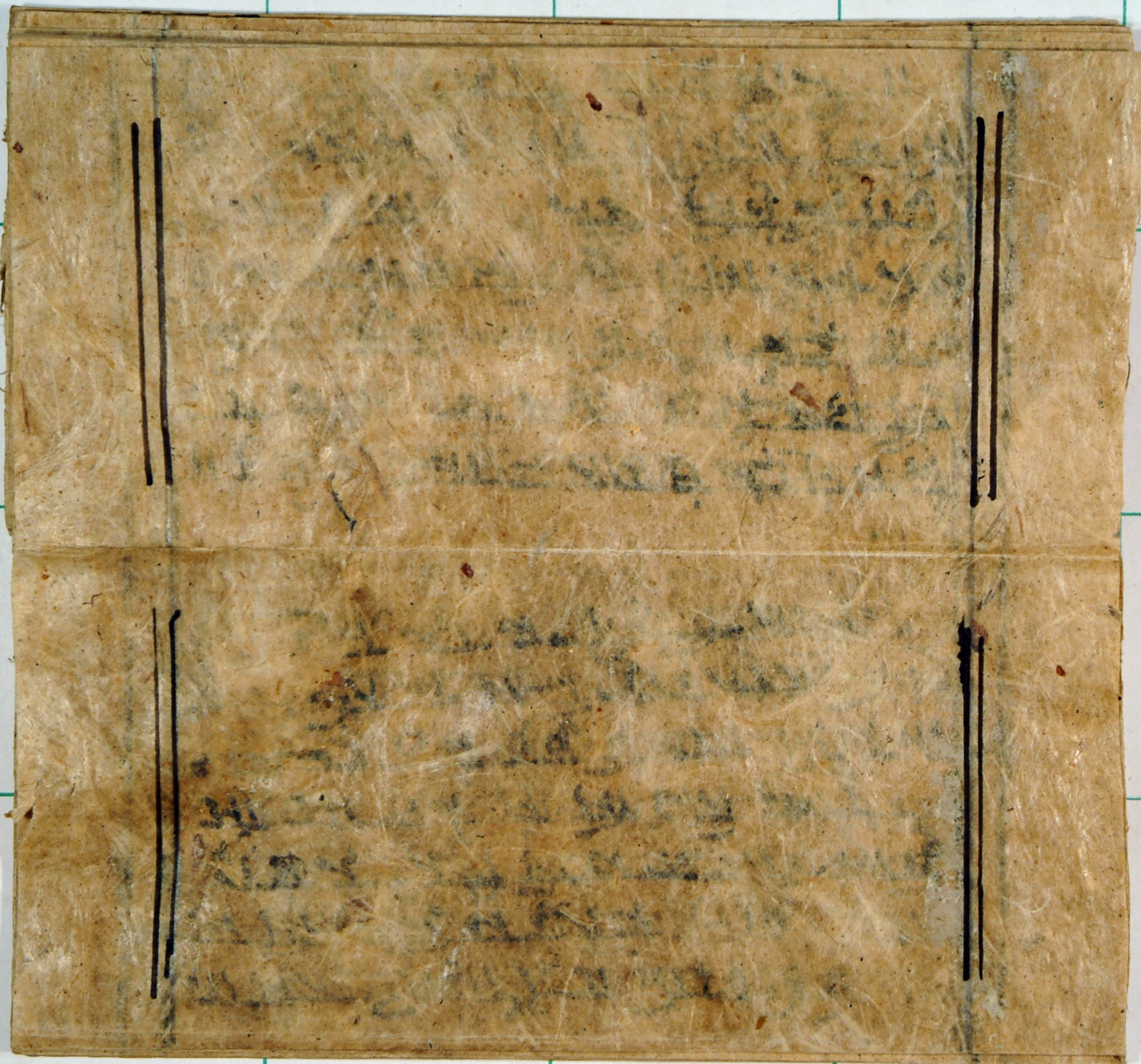
0 cms.

5

10

15

20



15

10

5

0 cms.

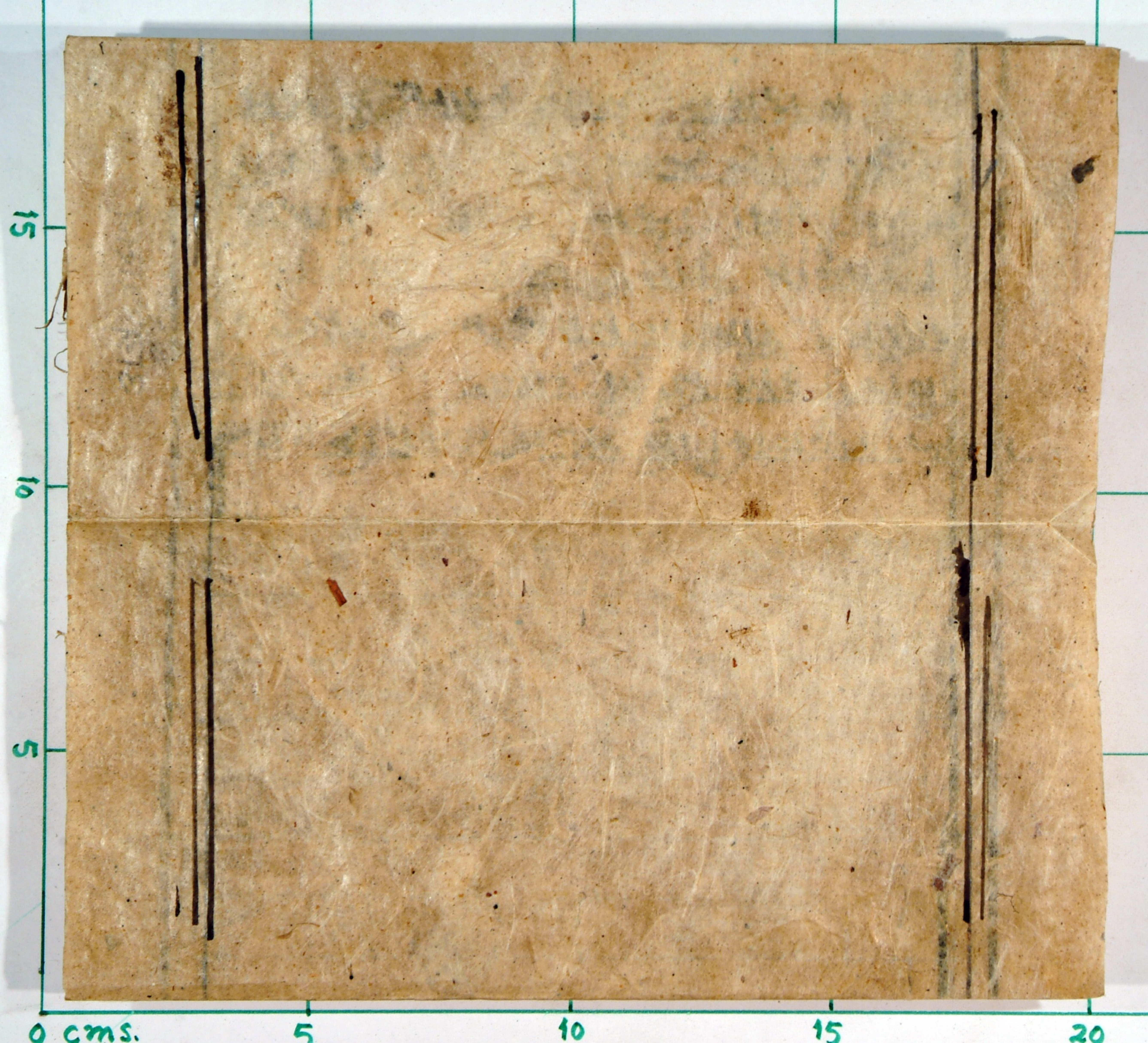
5

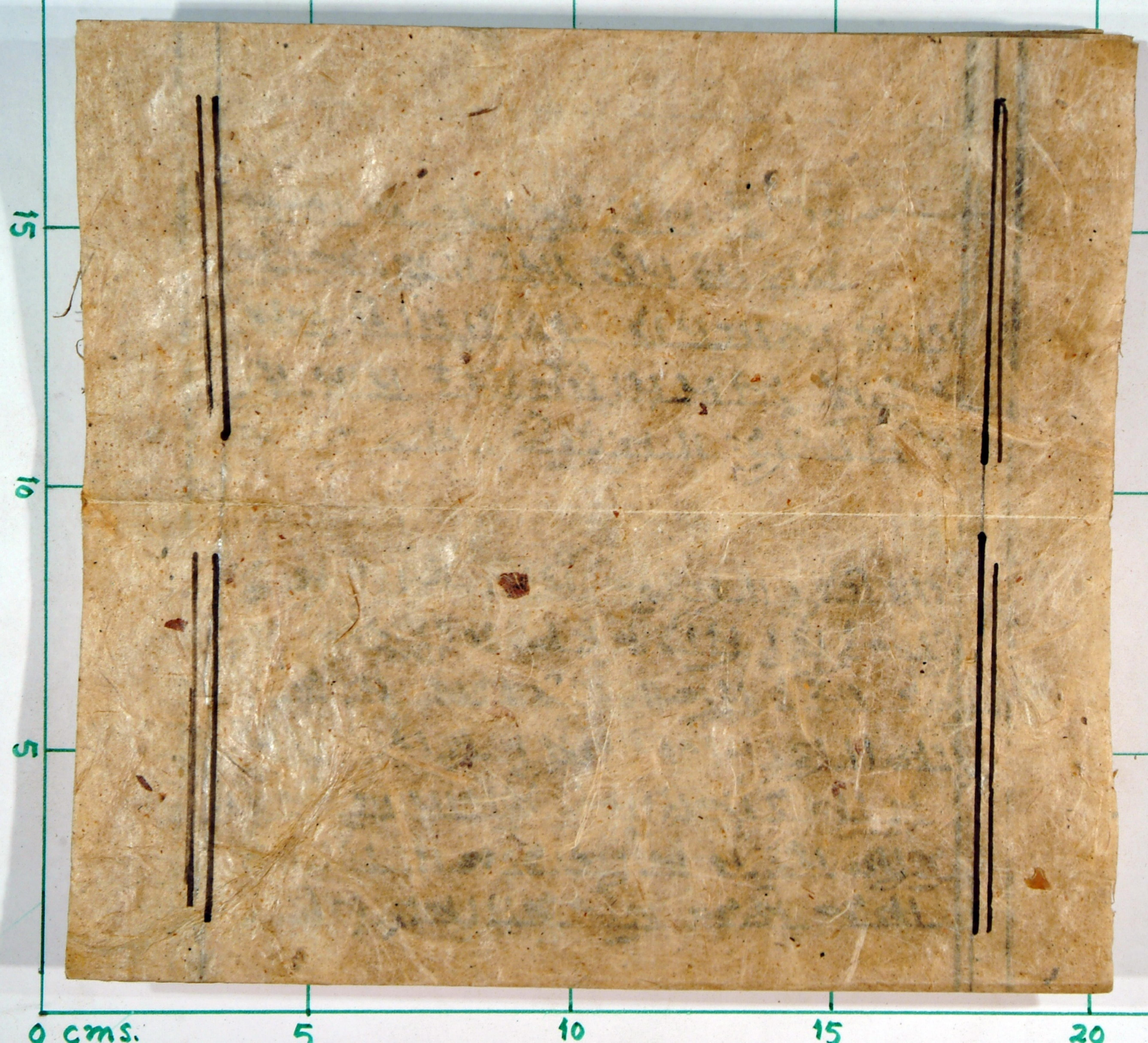
10

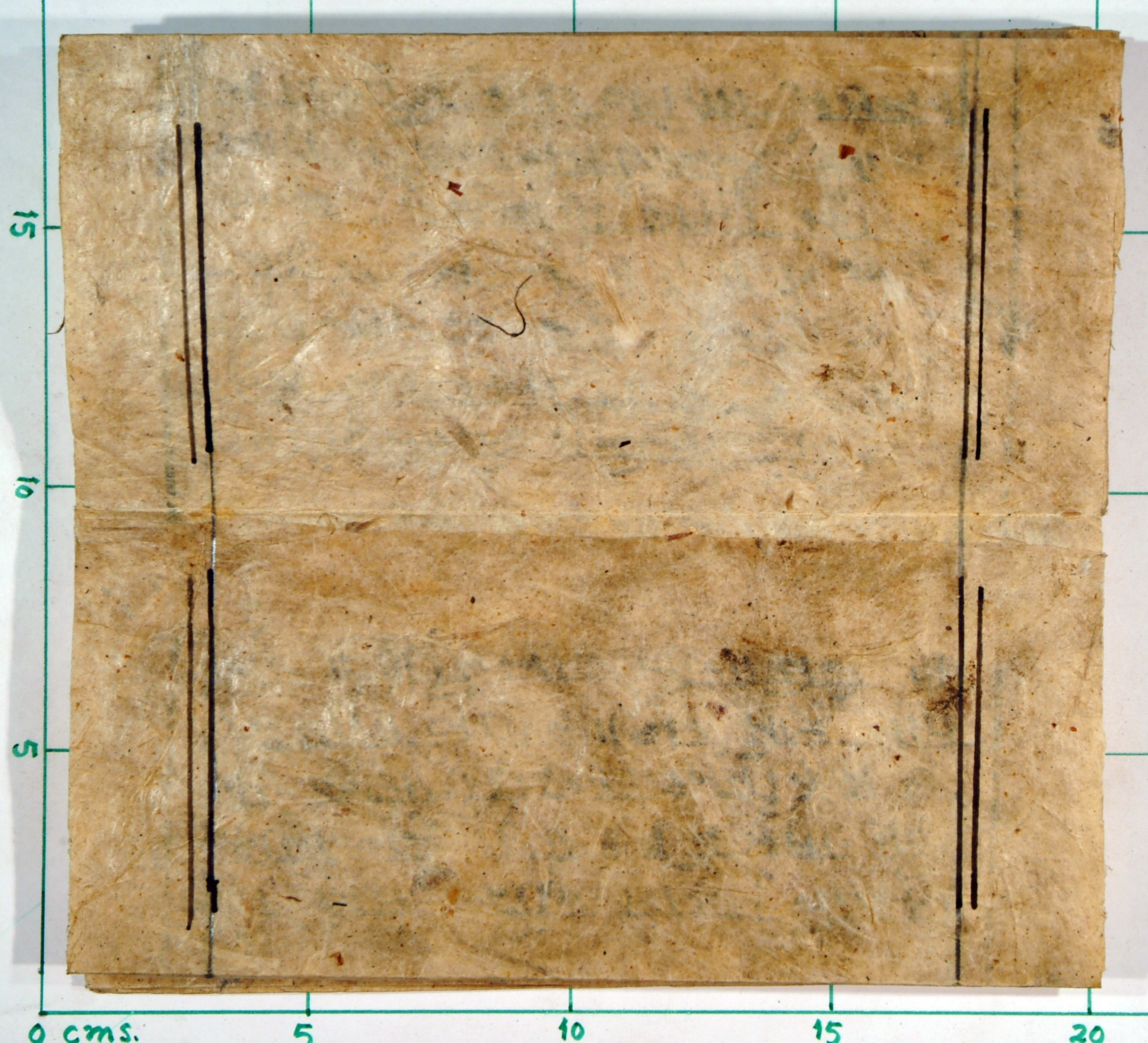
15

20











15

10

5

0 cms.

5

10

15

20